पाठ–2.

धनुष–भंग (तुलसीदास)

सन्दर्भ–प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के काव्य-खण्ड के अन्तर्गत 'धनुष-भंग' नामक शीर्षक से उद्धृत है तथा रामचरित मानस के 'बालकाण्ड' से लिया गया है। इसके रचयिता 'गोस्वामी तुलसीदास जी' है।

१. दो०- उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग।।
नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी।।
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने।।
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरसहिं सुमन जनावहिं सेवा।।
गुर पद बंदि सहित अनुराग। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा।
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी।।
चलत राम सब पुर नरनारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी।।
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौ कछु पुन्य प्रभाउ हमारे।।
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं।।

काव्यगत सौंदय- रस-भक्ति एवं श्रृंगार, छन्द-चौपाई, अलंकार-रूपक, उपमा, अनुप्रास, भाषा- अवधी, गुण-प्रसाद, माधुर्य

प्रश्न.1- उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

प्रश्न.2- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- व्याख्या- राजाओं की आशारुपी रात्रि नष्ट हो गयी। उनके वचनरुपी तारों के समूह का चमकना बंद हो गया अर्थात् वे मौन हो गये। अभिमानी राजारुपी कुमुद संकुचित हो गये और कपटी राजारुपी उल्लू छिप गये।।

मुनि और देवतारुपी चकवे शोकरहित हो गये। वे फूल बरसाकर अपनी सेवा प्रकट कर रहे हैं । प्रेम सहित गुरु के चरणों की वन्दना करके श्री रामचन्द्र जी ने मुनियों से आज्ञा माँगी ।

समस्त जगत् के स्वामी श्रीराम जी सुन्दर मतवाले श्रेष्ठ हाथी की-सी चाल से स्वाभाविक ही चले। श्रीरामचन्द्र जी के चलते ही नगर भर के सब स्त्री-पुरुष सुखी हो गये और उनके शरीर रोमांच से भर गये ।उन्होंने पितर और देवताओं की वन्दना करके अपने पुण्यों का स्मरण किया। यदि हमारे पुण्यों का कुछ भी प्रभाव हो, तो हे गणेश गोसाइ! रामचन्द्रजी शिवजी के धनुष को कमल की डंडी की भाँति तोड़ डालें।

प्रश्न- भगवान श्रीराम किस प्रकार चले?

उत्तर-भगवान श्रीराम मतवाले, सुन्दर व श्रेष्ठ हाथी की सी चाल से सहजता के साथ चले।

प्रश्न- किसका शरीर पुलकित हो उठा?

उत्तर-धनुष भंग हेतु श्रीराम के चलने से नगर निवासी नर-नारियों का शरीर पुलकित हो उठा।

प्रश्न- किसकी आशारुपी रात्रि नष्ट हो गई?

उत्तर-समस्त राजाओं की।

२. दो०- रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाई।
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ।।
सखि सब कौतुकु देखनिहारे। जेउ कहावत हितू हमारे।।
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं।।
रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा।।
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं।।
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी।।
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी।।
कहँ कुभज कहँ सिंधु अपारा। सोघेउ सुजसु सकल संसारा।।
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु त्रिभुवन तम भागा।।

काव्यगत सौंदय- रस-वात्सल्य, छन्द- चौपाई, अलंकार-रूपक, दृष्टान्त, अनुप्रास, भाषा- अवधी, गुण-प्रसाद, माधुर्य।

प्रश्न-उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर-उपर्युक्त

प्रश्न-रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **व्याख्या-** हे सखि! ये जो हमारे हितू कहलाते हैं, वे भी सब तमाशा देखनेवाले हैं। कोई भी गुरु विश्वामित्र जी को समझाकर नहीं कहता कि ये बालक हैं, इनके लिये ऐसा हठ अच्छा नहीं। रावण और बाणासुर ने जिस धनुष को छुआ तक नहीं और सब राजा घमंड करके हार गये, वही धनुष इस सुकुमार राजकुमार के हाथ में दे रहे हैं। हंस के बच्चे भी कहीं मन्दराचल पहाड़ उठा सकते हैं?

प्रश्न- उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा छंद है?

उत्तर- चौपाई।

प्रश्न- राजकुमारों के हाँथ में शिवधनुष देना कैसा होगा?

उत्तर-मन्दराचल पर्वत को हंस के बच्चे के हाथ में देने जैसा होगा।

३. दो०– मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब।।

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे।।
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी।।
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती।।
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही।।
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी।।
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरूआई।।
गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा।।
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-वीर , छन्द- चौपाई, अलंकार-अनुप्रास, उपमा, पुनरूक्तिप्रकाश, भाषा- अवधी, गुण-प्रसाद, माधुर्य

प्रश्न- उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

प्रश्न-रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- व्याख्या- कामदेव ने फूलों का ही धनुष-बाण लंकर समस्त लोकों को अपने वश कर रखा है। हे देवी! ऐसा जानकर सन्देह त्याग दीजिये। हे रानी! सुनिये, रामचन्द्र जी धनुष को अवश्य ही तोड़ेंगे।।

सखी के वचन सुनकर रानी को विश्वास हो गया । उनकी उदासी मिट गयी और श्रीराम के प्रति उनका प्रेम अत्यन्त बढ़ गया। उस समय श्रीरामचन्द्रजीको देखकर सीताजी भयभीत हृदयसे जिस-तिस से विनती कर रही हैं।।

वे व्याकुल होकर मन-ही-मन मना रही हैं-हे महेश-भवानी! मुझ पर प्रसन्न होइये, मैंने आपकी जो सेवा की है, उसे सुफल कीजिये और मुझ पर स्नेह करके धनुष के भारीपन को हर लीजिये गणों के नायक, वर देने वाले देवता गणेश जी! मैंने आज ही के लिये तुम्हारी सेवा की थी । बार-बार मेरी विनती सुनकर धनुष का भारीपन बहुत ही कम कर दीजिये।

४. दो०- देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर।।४।।

नीके निरखि नयन भरि सोभा। पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा ।।
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभु न हानी।।
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई ।।
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा।।
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा ।।
सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभुचाप गति तोरी ।।
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी।।
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष जुग सय सम जाहीं।।

प्रश्न- उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर-उपरोक्त।

प्रश्न- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **व्याख्या-** श्री रघुनाथजी की ओर देख-देखकर सीताजी धीरज धरकर देवताओं को मना रही हैं। उनके नेत्रों में प्रेम के आँसू भरे हैं और शरीर में रोमांच हो रहा है।।

अच्छी तरह नेत्र भरकर श्री रामजी की शोभा देखकर, फिर पिता के प्रण का स्मरण करके सीताजी का मन क्षुब्ध हो उठा। (वे मन ही मन कहने लगीं-) अहो! पिताजी ने बड़ा ही कठिन हठ ठाना है, वे लाभ-हानि कुछ भी नहीं समझ रहे हैं।।

मंत्री डर रहे हैं, इसलिए कोई उन्हें सीख भी नहीं देता, पंडितों की सभा में यह बड़ा अनुचित हो रहा है। कहाँ तो वज्र से भी बढ़कर कठोर धनुष और कहाँ ये कोमल शरीर किशोर श्यामसुंदर !।।

भावार्थः- हे विधाता! मैं हृदय में किस तरह धीरज धरूँ, सिरस के फूल के कण से कहीं हीरा छेदा जाता है। सारी सभा की बुद्धि भोली (बावली) हो गई है, अतः हे शिवजी के धनुषा अब तो मुझे तुम्हारा ही आसरा है।।

तुम अपनी जड़ता लोगों पर डालकर, श्री रघुनाथजी (के सुकुमार शरीर) को देखकर (उतने ही) हल्के हो जाओ। इस प्रकार सीताजी के मन में बड़ा ही संताप हो रहा है। निमेष का एक लव (अंश) भी सौ युगों के समान बीत रहा है।।

५. दो०- प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि, राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग, जनु बिधु मंडल डोल।।

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रकट न लाज निसा अवालोकी।।
लोचन जल रह लोचन कोना। जैसें परम कृपन कर सोना।।
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रीतिति उर आनी।।
तन मन बचन मोर पनु सांचा। रघुपति पद सरोज चिति रांचा।।
तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहि मोहि रघुबर कै दासी।।
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।।
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना।।
सियहि बिलाकि तकेउ धनु कैसें। चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसें।।

काव्यगत सौंदर्य- रस-श्रृंगार एवं वीर, छन्द- दोहा और चौपाई, अलंकार-रूपक, उपमा उत्प्रेक्षा, भाषा-अवधी, गुण-ओज।

प्रश्न- उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपरोक्त।

प्रश्न- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- व्याख्या-प्रभु श्रीरामचन्द्र जी को देखकर फिर पृथ्वी की ओर देखती हुई सीता जी के चंचल नेत्र इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं, मानो चन्द्रमण्डल रुपी डोल में कामदेव की दो मछलियाँ खेल रही हों।।

सीता जी की वाणीरुपी भ्रमरी को उनके मुखरुपी कमल ने रोक रखा है। लाजरुपी रात्रि को देखकर वह प्रकट नहीं हो रही है। नेत्रों का जल नेत्रों के कोने में ही रह जाता है। जैसे बड़े भारी कंजूस का सोना कोने में ही गड़ा रह जाता है। अपनी बढ़ी हुई व्याकुलता जानकर सीताजी सकुचा गयीं और धीरज धरकर हृदय में विश्वास ले आयीं कि यदि तन, मन और वचन से मेरा प्रण सच्चा है और श्रीरघुनाथ जी के चरण कमलों में मेरा चित्त वास्तव में अनुरक्त है।।

तो सब के हृदय में निवास करने वाले भगवान् मुझे रघुश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र जी की दासी अवश्य बनायेंगे। जिसका जिस पर सच्चा स्नेह होता है, वह उसे मिलता ही है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।।

प्रभु की ओर देखकर सीताजी ने शरीर के द्वारा प्रेम ठान लिया अर्थात् यह निश्चय कर लिया। कि यह शरीर इन्हीं का होकर रहेगा। कृपानिधान श्रीराम जी सब जान गये। उन्होने सीताजी को देखकर धनुष की ओरऐसे ताका, जैसे गरुड़ जी छोटे-से सर्प की ओर देखते हैं।।

प्रश्न- **श्रीरामचन्द्र जी ने धनुष को किस प्रकार देखा?**

उत्तर-धनुष को ऐसे देखा जैसे गरुड़ छोटे से सर्प को देखता है।

६. दो०- लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मंडु।।

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला।।
राम चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा।।

चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए।।
सब कर संसउ अरु अग्यानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू।।
भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई।।
सिय कर सोचु जनक पिछतावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा।।
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई।।
राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहिं कोऊ कड़हारू।।

काव्यगत सौंदर्य- रस-वीर, छन्द-चौपाई, अलंकार-रूपक, भाषा-अवधी, गुण-ओज, प्रसाद

प्रश्न- उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त।

प्रश्न- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **व्याख्या-तुलसीदास जी कहते हैं कि इधर जब लक्ष्मणजी ने देखा कि रघुकुलमणि श्रीरामचन्द्रजी ने शिवजी के धनुष की ओर ताका है, तो वे शरीर से पुलकित हो ब्रह्माण्ड को चरणों से दबाकर निम्नलिखित बचन बोले-हे दिग्गजों! हे कच्छप! हे शेष! हे वाराह! धीरज धरकर पृथ्वी को थामें रहो, जिससे यह हिलने न पावे। श्रीरामचन्द्रजी शिवजी के धनुष को तोड़ना चाहते हैं। मेरी आज्ञा सुनकर सब सावधान हो जाओ।**

श्रीरामचन्द्रजी जब धनुष के समीप आये, तब सब स्त्री-पुरुषों ने देवताओं और पुण्यों को स्मरण किया। सबका सन्देह और अज्ञान, नीच राजाओं का अभिमान, परशुरामजी के गर्व की गुरुता, देवता और रानियों के दारुण दुःख का दावानल, ये सब शिवजी की धनुषरुपी बड़े जहाज को पाकर, समाज बनाकर उस पर जा चढ़े। ये श्रीरामचन्द्रजी की भुजाओं के बलरुपी अपार समुद्र के पार जाना चाहते हैं, परन्तु कोई केवट नहीं हैं।

प्रश्न- ब्रह्माण्ड को चरणों से किसने दबाया?

उत्तर- लक्ष्मण जी ने

प्रश्न- कड़हारु, बोहितु, शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर- **कड़हारु** - केवट, **बोहितु** - जहाज।

७. दो०- राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि ।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि ।।
देखी बिपुल बिकल बैदेही। निमिष बिहात कलप सम तेही ।।
तृषित बारि बिन जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तड़ागा ।।
का बरषा सब कृषी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें ।।
अस जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी ।।
गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा।।
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ। पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ ।।
लेत चढ़ावत खैचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें।।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।।

व्याख्या- दो०-श्री रामजी ने सब लोगों की ओर देखा और उन्हें चित्र में लिखे हुए से देखकर फिर- पाधाम श्री रामजी ने सीताजी की ओर देखा और उन्हें विशेष व्याकुल जाना।।

चौ०- भावार्थः- उन्होंने जानकीजी को बहुत ही विकल देखा। उनका एक-एक क्षण कल्प के समान बीत रहा था। **यदि प्यासा आदमी पानी के बिना शरीर छोड़ दे, तो उसके मर जाने पर अमृत का तालाब भी क्या करेगा?**

सारी खेती के सूख जाने पर वर्षा किस काम की? समय बीत जाने पर फिर पछताने से क्या लाभ? जी में ऐसा समझकर श्री रामजी ने जानकीजी की ओर देखा और उनका विशेष प्रेम लखकर वे पुलकित हो गए।।

मन ही मन उन्होंने गुरु को प्रणाम किया और बड़ी फुर्ती से धनुष को उठा लिया। जब उसे (हाथ में) लिया, तब वह धनुष बिजली की तरह चमका और फिर आकाश में मंडल जैसा (मंडलाकार) हो गया।।

लेते चढ़ाते और जोर से खींचते हुए किसी ने नहीं लखा (अर्थात ये तीनों काम इतनी फुर्ती से हुए कि धनुष को कब उठाया, कब चढ़ाया और कब खींचा, इसका किसी को पता नहीं लगा), सबने श्री रामजी को (धनुष खींचे) खड़े देखा। उसी क्षण श्री रामजी ने धनुष को बीच से तोड़ डाला। भयंकर कठोर ध्वनि से (सब) लोक भर गए।।

भरे भुवनघोर कठोर रव, रबि, बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-वीर, छन्द-सवैया, अलंकार-अतिशयोक्ति, अनुप्रास, भाषा-अवधी, गुण-ओज, प्रसाद

प्रश्न- उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त।

प्रश्न- **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर- व्याख्या-घोर कठोर शब्द से तीनों लोक भर गये भयभीत होकर सूर्य के घोड़े अपनी राह छोड़कर जाने लगे दिग्गज चिंघाड़ने लगे धरती काँपने लगी, शेषनाग, वाराह, कच्छप ये सभी व्याकुल हो उठे। धनुष भंग की भयंकर ध्वनि के कारण देवता एवं असुर तथा ऋषिगण कानों पर हाथ रखकर व्याकुल होकर सोच रहें हैं कि अब क्या होने वाला है। तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीराम जी ने धनुष तोड़ दिया है यह सभी को ज्ञात हो गया है उसी की भयंकर ध्वनि है। सभी लोग श्रीराम की जय-जयकार करने लगें।

प्रश्न- **उपर्युक्त पंक्तियों में किस समय का वर्णन है?**

उत्तर- श्रीरामचन्द्र द्वारा धनुष-भंग का वर्णन है।

प्रश्न- **जब रामचन्द्र जी ने धनुष तोड़ा तो उस समय क्या स्थिति हुई?**

उत्तर- धनुष भंग के कठोर ध्वनि से सब लोक भर गये, सूर्य के घोड़े मार्ग छोड़कर चलने लगे। दिग्गज चिंघाड़ने लगे, धरती डोलने लगी, शेष, वाराह और कच्छप व्याकुल हो उठे। देवता, राक्षस और मुनि कानों पर हाथ रखकर सब व्याकुल होकर विचारने लगे। तुलसीदास जी कहते हैं, जब सबको निश्चय हो गया कि श्री रामजी ने धनुष को तोड़ डाला, तब सब श्री रामचन्द्र जी की जय बोलने लगे।

परीक्षा की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण

दो०- मंत्र परम लघु जासु बस, विधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ, बस कर अंकुश खर्ब।।

काव्यगत सौंदर्य- रस-वीर, छन्द- दोहा, अलंकार-दृष्टान्त, भाषा-अवधी, गुण-ओज

प्रश्न-उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर-उपर्युक्त।

प्रश्न-रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **व्याख्या**- एक सखी सीता जी की माता से कहती है कि हे रानी! जैसे ॐ का मंत्र अत्यधिक छोटा होता है परन्तु ब्रह्मा, विष्णु, महेश और समस्त देवता उसके वश में है; उसी प्रकार मदमस्त हाथी को अपने वश में करने वाला अंकुश भी बहुत छोटा होता है। अतः आप श्रीराम को छोटा न समझें।

उपर्युक्त पंक्तियों में किस समय का वर्णन है?

उत्तर- धनुष-भंग के समय का वर्णन किया गया है।